डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

B. A. Part - II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - IV

Date - 11-02-2023

'अजातशत्रु' का भाषा-शैली

प्रसाद की नाटकीय भाषा पर क्लिष्टता का आरोप लगाया जाता है। उसमें दुरूहता का दोषारोपण भी किया जाता है। परंतु भाषा के संबंध में प्रसाद जी ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया है, जिसे डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है- "भिन्न-भिन्न देश और वर्ग वालों से उनके देश और वर्ग के अनुसार भाषा का प्रयोग कराने से नाटक को भाषा का अजायबघर बनाना पड़ता है ..... भाषा-विविधता के लिए आग्रह न करना ही हितकर है। स्वरूप भिन्नत्व केवल वेषभूषा से ही व्यक्त कर देना चाहिये।

इस प्रकार वे अपने नाटकों में अनेक भाषाओं का मिश्रण नहीं चाहते थे। यही कारण था कि इन्होंने संस्कृत के तत्सम शब्दों से युक्त साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया है, यथा—

मल्लिका : "चंद्र, सूर्य, शीतल, उष्ण, क्रोध, करुण, द्वेष, स्नेह का द्वंद्व संसार का मनोहर दृश्य है।"

शैली की दृष्टि से "अजातशत्रु" में भावात्मक, आलंकारिक, सूक्ति प्रधान और हास्य पूर्ण शैली दृष्टिगोचर है। हास्य-व्यंग्यात्मक शैली का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

दमनना : बेटी पद्मा ! चल ! इसी से कहते हैं कि सौत काठ की भी बुरी होती है- देखी निर्दयता - अजात को यहाँ न आने दिया।

वासवी : चल, चल, लड़ मत कंगालिन।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भाषा - शैली की दृष्टि से 'अजातशत्रु' नाटक अत्यधिक सशक्त एवं सफल सिद्ध हुआ है।